'तेरा वर्ष'

संबंधानुभूति सप्ताह – प्रभु मेरे परमशिक्षक

29.09.2013

1. स्वमान – मैं गॉडली स्टूडेन्ट हूँ।

- मैं कितना भाग्यवान हूँ जो मुझे पढ़ाने के लिये स्वयं भगवान रोज परमधाम से आते हैं....फिर क्या ऐसी ऊंची पढ़ाई के लिये मैं कोई बहाना बना सकता हूँ....? इस पढ़ाई से मैं नर से श्री नारायण बन रहा हूँ....नीच-पापी से ऊँच-महान बन रहा हूँ....तो इस पढ़ाई के प्रति मुझे कितना रिगार्ड होना चाहिए....!!!

2. योगाभ्यास –

अ. वतन में बापदादा के सम्मुख बैठ मुरली सुनना....।

ब. मैं फरिश्ता ज्ञान सागर से ज्ञान धारण कर सारे विश्व ग्लोब पर ज्ञान वर्षा कर रहा हूँ....।

स. मैं मास्टर ज्ञान सूर्य, ज्ञान सूर्य बाबा से कम्बाइंड होकर सारे संसार से अज्ञान अंधकार को दूर कर रहा हूँ....।

द. मैं पैगम्बर, ग्लोब के मध्य स्थित हो ज्ञान-शंख ध्वनि कर रहा हूँ, जिसकी गूँज विश्व के कोने-कोने तक पहुंचकर अज्ञान नींद में सोये हुए सभी कुंभकरणों को जागृत कर रही है....।

3. धारणा – रेगुलर, पंक्चुअल और ओबिडिएन्ट

- एक आदर्श विद्यार्थी कभी अपनी क्लास मिस नहीं करता। वह समय का पाबंद होता है। अपने शिक्षक से पूर्व ही कक्षा में उपस्थित हो जाता है और शिक्षक की हर आज्ञा का पालन करता है। यही गुण उसे इतिहास में अमर बना देते हैं।

4. चिंतन –

- गॉडली स्टूडेन्ट की विशेषता क्या होगी ?
- गॉडली स्टूडेन्ट का कर्त्तव्य क्या होगा ?
- एक आदर्श विद्धार्थी का शब्द चित्र बनाइये ?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! संसार में किसी भी आत्मा वा धर्मात्मा का भाग्य नहीं, जिनका शिक्षक स्वयं भगवान हो। सारे कल्प में हम ही ऐसी भाग्यशाली आत्माएँ हैं जिन्हें एक जन्म की पढ़ाई से जन्म-जन्म के लिये सर्वोच्च पद प्राप्त होने की परमात्म गारंटी प्राप्त है। जिन्हें संसार ने नाउम्मीद कर नीचे गिराया, उन्हीं को उस परम शिक्षक ने तीनों कालों का ज्ञान देकर उम्मीदवार बना दिया। ऐसे परमशिक्षक का हम कितना ना दिल से शुक्रिया अदा करें।